प्रातः क्लास 26/11/68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बे० रूहानी बच्चों को समझाते हैं। जब ओमशान्ति कहा जाता है तो गोया अपने आत्मा --को स्वधर्म का परिचय दिया जाता है। तो जरूर बाप भी आटोमेटिकली याद आता है। क्योंकि याद तो हरेक --मनुष्य भगवान को ही करते हैं। सिर्फ भगवान का पूरा परिचय नहीं है। आत्मा का भी पूरा परिचयनहीं है। भगवान अपना और आत्मा का ही परिचय देनेआते हैं। पतित-पावन कहा ही जाता है भगवान को। पतित से पावन बनाने लिये भगवान भी ड्रामा अनुसार बांधायमान है। उनको भी आना ही हैपुरुषोत्तम संगम युग पर। संगम युग की सब कहानी भी देते हैं। पुरानी दुनिया के अन्त और नई दुनिया के आदि को ही पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। पुरानी दुनिया और नई दुनिया के बीच में ही बाप आते हैं। पुरानी दुनिया को मृत्युलोक नई दुनिया को अमरलोक कहा जाता है। यह भी तुम समझते हो मृत्युलोक में आयु कम होती है। अकाले मृत्यु होती रहती है घड़ी2 । वह है ही अमरलोक। जहां अकाले मृत्यु होता ही नहीं। क्योंकि पवित्र हैं। अपवित्रता से व्यभिचारी बनते हैं और आयु भी कम होती है। बल भी कम हो जाता है। सतयुग में पवित्र होने कारण अव्यभिचारी हैं, बल भी जास्ती रहता है। बल बिगर राजाई कैसे प्राप्त की। जरूर बाप से इन्होंने आशीर्वाद ली होगी। बाप है सर्वशक्तिवान। आशीर्वाद कैसेली होगी? बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो जिन्हों ने जास्ती याद किया होगा उन्होंने ही आशीर्वाद ली होगी। आशीर्वाद कोई मांगने की चीज नहीं है। यह तो मेहनत करने की चीज है। जितना जास्ती याद करेंगे उतना ही जास्ती आशीर्वाद मिलेंगी अर्थात ऊंच पद मिलेगा। याद ही नहीं करेंगे तो आशीर्वाद भी नहीं मिलेगी। लौकिक बाप कब बच्चों को कहते नहीं कि मुझे याद करो। छोटेपन से आपेही बाबा बाबा कहते रहते हैं। आरगन्स छोटी है। बड़े बच्चे कब ऐसे बाबा बाबा मामा मा मा नहीं कहेंगे। उन्होंको बुधि में रहता है यह हमारे मां बाप हैं। जिससे यह वरसा मिलना है। कहने का याद करने की दरकार नहीं रहती। यहां तो बाप कहते हैं मुझे और वरसे को याद करो। हद के सम्बन्ध को छोड़ अभी बेहद के सम्बन्ध को याद करो। मनुष्य चाहते हैं हमारी गति हो। गति कहा जाता है मुक्तिधाम को। सदगति कहा जाता है फिर से जीवनमुक्ति में आने को। कोई भी पहले आवेगा तो जरूर सुख भोगेगा। बाप सुख के लिये ही आते हैं। जरूर कोई बात डिफीकल्ट है इसलिये इनको ऊंच पढ़ाई कहा जाता है। जितनी ऊंच पढ़ाई उतना डिफीकल्ट भी होगा। सभी तो पास हो न सकें। बड़े ते बड़ा इम्तहान थोड़े ही पास करते हैं। बहुत थोड़े स्टुडन्ट बड़े इम्तहान पास होते हैं। क्योंकि बड़ा इम्तहान होने से फिर सरकार को वेतन भी बहुत देना पड़े ना। इनसालवेन्ट होने कारणकई स्टुडन्ट बड़ा इम्तहान पास कर भी ऐसे ही बैठे रहते। सरकार पास इतना पैसानहीं है तो इतना वेतन दे। यहां तो बाप कहते हैं जितना ऊंच पढ़ेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। ऐसे भी नहीं सभी राजाएं वा साहुकार बनेंगे। सारा मदार पढ़ाई पर है। शक्ति की पढ़ाई नहीं कहा जाता। यह तो है रूहानी ज्ञान। जो रूहानी बाप पढ़ाते हैं। कितनी ऊंच पढ़ाई है। बच्चों को डिफीकल्ट लगता है। क्योंकि बाप को याद नहीं करते हैं। तो कैरेक्टर्स भी सुधरते नहीं। जो अच्छा याद करते हैं तो कैरेक्टर्स भी सुधरते अच्छे होते जाते हैं। बहुतमीठे सर्विसएबुल बनते जाते हैं। कैरेक्टर्स अच्छे न है फिर कोई पसन्द भी नहीं आते हैं। जो नापास होते हैं तो जरूर कैरेक्टर्स में रोला है। श्री ल०ना० के कैरेक्टर्स बहुत अच्छे हैं। राम की दो कला कैरेक्टर्स कहेंगे। कैरेक्टर्स सुधारने वाले युध के मैदान में लड़ाक होते हैं। तुमबाया पर जीत पाने लिये लड़ाक हो ना। राम को यह निशानी दी है, बाप समझाते हैं यह बाप को याद करे, और आपन को देवी गुणों वाला बनाते2 फेल हो गया। इसलिये यह निशानी राम को दी है। परन्तु यह कोई जानते नहीं हैं। इस निशानी को देख राम की कितने बाणों की लड़ाई रावण साथ दिखाई है। भक्ति मार्ग में ऐसे बातें सुनते नीचे ही गिरते आये हैं। भारत रावण राज्य बाद झूठ खण्ड हो पड़ता है। सच्च खण्ड में तो जरा भी झूठ हो न सके। रावण राज्य में सभी झूठ ही झूठ बोलते हैं। झूठे मनुष्य को देवी गुण वाला कह न सके। यह होलसेल की बात है रिटेल की ---

बात नहीं, बेहद की बात है। बाप खुद कहते हैं यह भक्ति मार्ग के शास्त्रों के भूसा ईरिलिगल है। एक बाप ही लोगल है। अर्थात सच्च कहने वाला। मनुष्य सभी ईरीगल बातें सुन सुनाते हैं। अभी बाप कहते हैं यह ईरीगल मनुष्यों की बातें न सुनो न सुनाओ। एक ईश्वर के मत को ही लोगल मत कहा जाता है। मनुष्य मत को ईरीगल मत कहा जाता है। लीगल मत से तुम ऊंच बनते हो अगर बाप के श्रीमत पर चलो तो। सभी नहीं चल सकते हैं। तो ईरीगल बन पड़ते हैं। लोगल मत से तुम ऊंच बनते हो अगर बाप की श्रीमत पर चलो तो। कई बाप के साथ प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा इतनी आयु हमने ईरीगल काम किया अभी नहीं करेंगे। सभी को ईरीगल है काम विकार का भूत। देह अभिमान का भूत तो सभी में है ही। नारीवादी पुरुष में देह अभिमान ही होता है। बाप तो है ही विदेही। विचित्र। तो बच्चे (आत्मायें) भी विचित्र हैं। यह समझ की बात है। हम आत्मायें विचित्र हैं। फिर यहां चित्र में आते हैं। अभी बाप फिर कहते हैं विचित्र बनो। अपने स्वधर्म में टिको। चित्र के धर्म में न टिको। विचित्रता की धर्म में टिको। देह अभिमान में न आओ। बाप कितना समझाते हैं। इसमें याद की बहुत जरूरत है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान प्युर बनेंगे। इम्प्युरिटी में जाने से बहुत दण्ड मिल जाता है। बाप का बनने बाद अगर कोई भूल होती है तो फिर गायन है सतगुरु के निन्दक ठौर न पाये। अगर तुम मेरी मत पर चल पवित्र न बनेंगे तो सौगा दण्ड भोगना पड़ेगा। विवेक चलाना है अगर हम याद नहीं कर सकते हैं तो इतना ऊंच पद नहीं पा सकेंगे। पुरुषार्थ के लिये टाईम भी देते हैं। तुमको कहते हैं क्या सबूत है जो तुम कहते हो अभी अन्त है। बोलो जिस तन में आते हैं, वह प्रजापिताब्रह्मा तो मनुष्य है ना। मनुष्य का नाम शरीर पर पड़ता है। शिव बाबा तो न मनुष्य है न देवता है। उनको सुप्रीम आ0 कहा जाता है। वह तो पतित का पावन नहीं होता। वह समझाते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे पाप कट जायेंगे। बाप ही बैठ समझाते हैं। तुम सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान बने हो। फिर सतोप्रधान बनने लिये मुझे याद करो। अभी तो मनुष्यों की दुधजानवरों से भी बदतर हो चुकी है। एक दो में कहते हैं ना तुम जैसे मूकना हाथी हो। तुम तो बन्दर हो। साहुकार हो चाहे गरीब हो सभी के मुख से यह गालियां निकलती हैं। परन्तु वह तो हंसी कुड़ी ही समझते हैं। बाप समझाते हैं लोग प्रायः ऐसे ही बन गये हैं। इन देवताओं की लैयाकत देखो कैसी है। और इनसे रहम मांगने वालों की भी देखो। बन्दर लगता है हम क्या थे फिर 84 जन्मों में कितना गिरकर एकदम चट हो पड़े हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे तुम देवी घराने के थे। अभी अपनी चाल को देखो यह बन सकते हो। ऐसे नहीं सभी ल0ना0 बनेंगे। फिर तो सारा फूलों का बगीचा हो। शिव बाबा को सिर्फ गुलाब का फूल ही चढ़ाते। परन्तु नहीं। फूल भी रखते हैं अक भी चढ़ाते हैं। बाप के बच्चे कोई फूल भी बनते हैं अक भी बनते हैं। पास नापास तो होते ही हैं। खुद भी समझते हैं यह राजा तो बन न सकेंगे। आप समान ही नहीं बनाते हैं। साहुकार कैसे, कौन बनेंगे वह तो बाप जाने। आगे चल तुम बच्चे भी बहुत समझ जायेंगे कि फलाना बाप का कैसा मददगार है। कल्प2 जिन्होंने जो किया है वही करेंगे। इसमें फर्क नहीं पड़ सकता। बाप पायन्ट्स तो देते रहते हैं। ऐसे2 बाप को याद करना है। और ट्रान्सफर भी करना है। भक्ति मार्ग में तुम ईश्वर अर्थ करते हो। परन्तु ईश्वर को जानते ही नहीं हो। इतना समझाते हैं वह ऊंच ते ऊंच भगवान है। ऐसे तो नहीं ऊंच ते ऊंच नाम रूप वाला है। वह है ही निराकार। फिर ऊंच ते ऊंच साकार यहां होते हैं। ब्रह्मा वि0 शं0 को भी देवता कहा जाता। ब्रह्मादेवतायनमः . . . फिर कहते हैं शिवपरमात्मायनमः। तो बड़ा ठहरा ना। ब्र0 वि0 शं0 को भी परमात्मा नहीं कहेंगे। भूल से कहते भी हैं शिव परमात्मायनमः। तो जरूर परमात्मा रूप हुआ ना। देवता को देवतायनमः कहते। मनुष्य लोक में मनुष्य को मनुष्य ही कहेंगे। उनको फिर परमात्मा नमः कैसे कह सकते। एक दो को परमात्मायनमः थोड़े ही कह सकते। अगर परमात्मा सर्वव्यापी है फिर तो एक दूसरे को परमात्मायनमः कहें। यह तो पूरा अज्ञान, इनसुल्ट है। सभी की बुद्धि में यह डाला गया है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। अभी तुम बच्चे समझते हो भगवान तो एक है उनको ही पतितपावन कहा जाता है। सभी को पावन बनाना यह भगवान का

ही काम है। जगत का गुरु कोई मनुष्य हो न सके। गुरु पावन होते हैं ना। यहां तो सभी पतित विश्व से पैदा होते हैं। ज्ञान को अमृत कहा जाता। भक्ति को अमृत नहीं कहा जाता है। भक्ति मार्ग में भक्ति ही चलती है। सभी मनुष्य भक्ति में हैं। ज्ञान का सागर जगद्गुरु एक को कहा जाता है। अभी तुम जानते हो बाप क्या आकर करते हैं। तत्वों को भी पवित्र बनाते हैं। ड्रामा में उनका पार्ट है। बाप सर्व का सदगति दाता है। अभी यह समझावें कैसे। आते तो बहुत ही हैं। आगे उद्घाटन करने आते थे तो तारें दी जाती थी। अभी देहली में भी मुरारजी देसाई उद्घाटन कर रहा है तो उनको समझाने तार दी जावेगी कि होनहार विनाश के पहले वेहद के बाप को जानकर इससे वरसाले लो। यह है रूहानी बाप। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी फादर कहते हैं। क्रियेटर है तो जरूर क्रियेशन को वरसा मिलेगा। वेहद के बाप को कोई भी नहीं जानते। बाप को भूलना यह भी ड्रामा में नूंध है। वेहद का बाप ऊंच ते ऊंच है वह कोई हद का वरसा तो नहीं देंगे ना। लौकिक बाप होते सभी वेहद के बाप को याद करते हैं। सतयुग में उनको कोई याद नहीं करते क्योंकि वेहद के सुख का वरसा मिला हुआ है। अभी तुम बाप को याद करते हो। आत्मा ही याद करती है फिर आत्मा ही अपने को और अपने बच्चे बाप को, ड्रामा को भूल जाती है। माया का प्रछावा पड़ जाता है। सतोप्रधान बुधि को फिर तमोप्रधान जरूर होना ही है। स्मृति में आता है नई दुनिया में देवी देवतायें सतोप्रधान थे यह कोई भी नहीं जानते हैं। दुनिया ही सतोप्रधान गोल्डेन एजेड बनती है। उसको कहा जाता है न्यू वर्ल्ड। यह सभी बातें बाप ही बच्चों को समझाते हैं। अभी तुमको नालेज पड़ा है हम यह थे फिर ऐसे2 नीचे आ गये हैं। बाप ही कल्प2 आकर समझाते हैं। कल्प2 जो वरसा तुम लेते हो पुरुषार्थ से वही मिलने का है। यह भी समझ में आता है ऐसे होगा। कोई कहते हैं कोशिश बहुत करते हैं परन्तु याद ठहरती नहीं है। इसमें बाप अथवा टीचर क्या करे। कोई पढ़ेंगे नहीं तो टीचर क्या करे। टीचर सभी को आशीर्वाद करे तो सभी पास हो जावें। पढ़ाई का फर्क तो बहुत रहता है। यह है बिल्कुल नई पढ़ाई। यहां तुम्हारे पास अक्सर करके गरीब दुःखी ही आवेंगे। साहुकार नहीं आवेंगे। दुःखी हैं तब आते हैं। साहुकार समझते हैं हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। तकदीर में न है। जिनके तकदीर में है उनको झट निश्चय बैठ जाता है। निश्चय और संशय में देरी नहीं लगती है। माया झट भूला देती है। दाईजा तो लगेगा ही। इसमें पूछने की दरकार ही नहीं। अपने ऊपर रहम करना है। श्रीमत तो मिलती रहती है। कितना सहज बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। ईश्वर को सर्वव्यापी कहना यह तो सभी से बड़ा पाप है। भगवान को गाली देते हैं। जब आदि को कोई ईज्जत लेते हैं तो उनको फट से दण्ड देदेते हैं। कोई आदि भी नहीं चलाते हैं। भगवान को भी बेईज्जत करते हैं तो दण्डा पड़ जाता है। बड़ा पाप बन जाता है। अभी तुम समझते हो यह तो बड़ी भूल है। बाप को गाली देते हैं ठिकाने पितर में कण कण में भगवान है। बाप की ग्लानी करते2 कितना नीचे गिर जाते हैं। यह है ही मृत्युलोक। यहां अकाले मृत्यु नहीं होता। क्लास में स्टुडेन्ट नम्बरवार बैठते हैं ना। यह भी स्कूल है ना। ब्राह्मण से पूछा जाता है तुम्हारे पास नम्बरवार होशियार बच्चे कौन से हैं। जो अच्छा पढ़ते हैं। वह राईट साईड में होने चाहिए। राईट हैंड का महत्व होता है। पूजा आदि भी राईट हैंड से करते हैं। लेफ्ट हैंड से जैसे बेहतर है। फिर भी काम तो आता ही है। सतयुग में भी लेफ्ट हैंड काम में आता है। जैसे दूध अनटच दायें हैंड निकलता है मशीन से वैसे कुछ मशीन पर हो जाता होगा ना। क्या होता होगा आगे चल तुमको पता पता पड़ता जावेगा। अभी समझाया नहीं है। वानी समझा जाता है वहां सफाई बहुत रहती है। बच्चेख्याल करते रहते हैं सतयुग में क्या होगा। सतयुग याद पड़ेगा तो सत बाबा भी याद पड़ेगा। बाबा हमको सतयुग का मालिक बनाते हैं। यहां यह पता नहीं रहता कि हमको यह बादशाही कैसे मिली है। इसलिये बाबा कहते हैं इन लक्ष्मी नारायण में भी ज्ञान नहीं है। बाप हर एक बात अच्छी रीत समझाते रहते हैं। जो कल्प पहले समझे हैं वह जरूर समझेंगे। फिर भी पुरुषार्थ तो करना पड़ता है। बाप आते ही हैं पढ़ाने। यह पढ़ाई है। इसमें बड़ी समझ चाहिए। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।